द्रव्यगुण विज्ञान – 1

अर्जुन के हृद्य गुण का अध्ययन

अध्येता	:	डा. रामानन्द झा
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1983 ; 225

अर्जुन सर्वोत्तम हृद्य के रूप में निर्दिष्ट है, किन्तु इसके Alkaloids के वैज्ञानिक परिणाम निराशाजनक रहे हैं । अतः इसके विभिन्न कल्पों का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

हृद्दौर्बल्य आतुरों का इतिवृत्त पत्रक बनाकर 30 रोगी चयनित किये गये । 10–10 आतुरों के 3 वर्ग बनाये गये ।

''अ'' वर्ग में अर्जुन चूर्ण 1.5 ग्राम x 2 दूध से ।

''ब'' वर्ग में अर्जुन घनवटी 2–2 गोली x 2 दूध से ।

''स'' वर्ग में अर्जुन शृत दुग्ध 10–10 मि.लि. x 2 क्षीर पाक विधि से ।

10–10 आतुरों में प्रयोगार्थ दिया गया । अधिकतम प्रयोग समय सभी वर्गों में 30 दिन तक रहा ।

चूर्ण से 20 प्रतिशत आतुरों में लाभ, घनवटी से 30 प्रतिशत आतुरों में लाभ और क्षीर पाक प्रयोग से 40 प्रतिशत आतुरों में लाभ मिला ।

अर्जुन प्रयोग के लिये क्षीर पाक विधि की अपेक्षाकृत उत्कृष्ट गुणवत्ता प्रतीत होती है ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 2

प्रसारणी विनिश्चय

अध्येता	:	डा. शम्भुदयाल शर्मा
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1983 ; 166

प्रसारणी की संदिग्धता निवारण हेतु द्रव्य, गुण, कर्म के सामान्य सिद्धान्तों का वैज्ञानिक, साहित्यिक, प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

अध्ययन के प्रथम भाग में ऐतिहासिक संकलन कर द्वितीय भाग में प्रसारणी की संदिग्धता निवारण हेतु इस नाम से प्रयुक्त –

Leptadenia sparitum wt. (Asclepiadeaceae)

Paederia foetida (Rubiaceae)

Merremia hastata Hallier f.

Merremia tridentata Hallier f. (Convolvulacea)

इन चार वनस्पतियों से अलग–अलग औषध सिद्ध तैल बनाकर संधिवात के रोगियों में प्रयुक्त कर तुलनात्मक अध्ययन किया गया । प्रसारणी तैल के 4 नमूनों का आभ्यन्तर, बाह्य प्रयोग संधिवात रोगियों में क्रमशः 10 मि.लि. व आवश्यकतानुसार प्रयुक्त किया । प्रयोगावधि 30 दिन रही ।

Leptadenia sparitum के तैल से अभ्यंग में 77.78 प्रतिशत लाभ रहा, आभ्यंतर पान के रूप में Paederia foetida का लाभ 71.40 प्रतिशत रहा, जबकि अभ्यंग एवं पान दोनों के रूप में Paederia foetida का लाभ 88.89 प्रतिशत रहा ।

द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन के आधार पर Paederia foetida (Rubiaceae) या गंध प्रसारणी को ही प्रसारणी के रूप में प्रयोग करना उचित है ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 3

पाषाण भेद विनिश्चय

अध्येता	:	डा. जयप्रकाश अवस्थी
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1984 ; 156

पाषाण भेद की संदिग्धता निवारण एवं द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन ही इस अध्ययन का उद्देश्य है ।

पाषाण भेद के नाम से प्रयुक्त भिन्न–भिन्न 3 द्रव्यों का मूत्र–परीक्षा एवं एक्स–रे परीक्षा के आधार पर अश्मरी एवं मूत्रकृच्छ्र में 30 आतुरों के 3 वर्गों पर प्रयुक्त किया गया ।

प्रथम वर्ग में Bergenia ligulata wall (Saxifragaceae) के मूल से निर्मित घनवटी का प्रयोग किया गया ।

द्वितीय वर्ग में 10 रोगियों को Aerva lanata Juss के मूल चूर्ण का प्रयोग किया गया ।

तृतीय वर्ग में Brayophyllum cralcynum के मूल कल्क को दिया गया (मात्रा, अवधि सहपानानुपान का उल्लेख नहीं हैं) ।

प्रथम वर्ग में घनवटी प्रयोग से 10 में से 5 को उत्तम लाभ, 4 को सामान्य लाभ रहा।

द्वितीय वर्ग में चूर्ण के प्रयोग से 4 को उत्तम व 5 को सामान्य लाभ रहा ।

तृतीय वर्ग में कल्क के प्रयोग से 2 रोगियों को उत्तम व 6 को सामान्य लाभ रहा।

Bergenia ligulata wall (Saxifragaceae) को गूगल, वात संशमन गुणों के साथ–साथ अश्मरी भेदन प्रभाव सर्वाधिक होने से पाषाण भेद के रूप में उपयोग लेना चाहिये तथा Aerva lanata juss को इसका प्रतिनिधि द्रव्य मानना चाहिये । Brayophyllum cralcynum का पाषाण भेद के रूप में प्रयोग नहीं करना चाहिये ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 4

गर्भाशय पर कार्मुक द्रव्यों का गुणकर्मात्मक वर्गीकरण एवं प्रयोग

अध्येता	:	डा. रूपराज भारद्वाज
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1985 ; 156

गर्भाशय विकारों का क्रिया एवं विकृति विज्ञान सम्मत वर्णन तो शास्त्रों में पर्याप्त मिलता है, किन्तु द्रव्यों का वर्णन अभी अपर्याप्त है, इसी का अनुसंधान अध्ययन का उद्‌देश्य है ।

शास्त्रीय लक्षणों के आधार पर असृग्दर की 30 रुग्णाओं का चयन कर 3 वर्गों में विभक्त किया गया ।

''1ले वर्ग'' में लोध्र त्वक् चूर्ण 6 ग्राम/2 मात्रा जल से ।

''2रे वर्ग'' में अशोक त्वक् चूर्ण 40 ग्राम/2 क्षीरपाक विधि से ।

''3रे वर्ग'' में नागकेशर चूर्ण 6 ग्राम/2 मात्रा दुग्ध से ।

10–10 रोगियों में 21 दिन तक दी गयी ।

अध्ययन में असृग्दर रोग में 19 शारीरिक व 28 आर्तव सम्बन्धी लक्षण शास्त्रों में हैं । जबकि रुग्णाओं में 17 शारीरिक लक्षण व 11 आर्तव सम्बन्धी लक्षण ही उपलब्ध हुये।

नागकेशर समूह में 100 प्रतिशत रोगियों में आर्तव सम्बन्धी सभी लक्षणों में लाभ हुआ। लोध्र त्वक् समूह में 8 रुग्णाओं में शारीरिक व आर्तव सम्बन्धी 5 लक्षणों में लाभ रहा । अशोक त्वक् चूर्ण समूह का लाभ नगण्य रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 5

भूम्यामलकी के कासहर कर्म का अध्ययन

अध्येता	:	डा. प्रेमपति द्विवेदी
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1985 ; 156

चरकोक्त कासहर गण में पठित भूम्यामलकी का सर्वसामान्य व्याधि कास में द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन करना ही इस महानिबन्ध का उद्‌देश्य है।

प्रशस्त गुणयुक्त भूम्यामलकी का चयन कर चूर्ण एवं घनवटी रूप में निर्माण कर 16–16 रुग्णों में दो वर्गों में प्रयोग किया ।

चूर्ण मात्रा 3–6 ग्राम x 3 बार मधु से, घनवटी मात्रा 250 से 500 मि.ग्रा. x 3 मधु से अधिकतम प्रयोगावधि 10 दिन रही ।

भूम्यामलकी चूर्ण से 50 प्रतिशत रोगियों को उत्तम लाभ, 43 प्रतिशत को सामान्य लाभ तथा 7 प्रतिशत को लाभ नहीं रहा।

भूम्यामलकी घनवटी से 56 प्रतिशत को उत्तम लाभ, 44 प्रतिशत को मध्यम लाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 6

रोहितक का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. राधावल्लभ शर्मा
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1985 ; 160

रोहितक (Tecomella undulata - Bignoniaceae) का द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर यकृदुदर के 40 रोगियों का चयन कर दो वर्ग बनाये गये ।

''प्रथम वर्ग'' में 20 रोगियों को रोहितक त्वक् चूर्ण 4 ग्राम x 2 बार उष्णोदक से 30 दिन तक दिया गया ।

''द्वितीय वर्ग'' में 20 रोगियों को रोहितक घनवटी 1 ग्राम x 2 बार उष्णोदक से 30 दिन तक दी गयी ।

प्रथम वर्ग में चूर्ण से 6 रोगियों को पूर्ण लाभ (70–95 प्रतिशत तक) रहा, 11 को सामान्य लाभ (40–70 प्रतिशत तक) रहा, 3 को अलाभ रहा ।

द्वितीय वर्ग में घनवटी के प्रयोग से 8 रुग्णों को पूर्ण लाभ, 10 को सामान्य लाभ तथा 2 को कोई लाभ नहीं रहा ।

रोहितक त्वक् चूर्ण की अपेक्षा घनवटी कल्पना अधिक प्रभावी सिद्ध हुयी है ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 7

वाजीकरण वर्ग की स्थापना (कतिपय द्रव्यों का नपुंसकता पर अध्ययन)

अध्येता	:	डा. शंकर प्रसाद भट्टाचार्य
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1985 ; 203

वाजीकरण द्रव्यों के गुणकर्मात्मक अध्ययन से उनके वाजीकरण की स्थापना ही अध्ययन का उद्देश्य है ।

अश्वगंधा (Withania somnifera), शतावरी (Asparagus recemosus), आकारकरभ (Anacayclios pyrathram) का इस हेतु नपुंसकत्व (अशुक्राणुता–अल्प शुक्राणुता) में 40 रोगियों पर 4 वर्गों में प्रयोग किया गया ।

''अ वर्ग'' में अश्वगंधा चूर्ण 5 ग्राम x 2 मात्रा ।

''ब वर्ग'' में शतावरी चूर्ण 5 ग्राम x 2 मात्रा ।

''स वर्ग'' में आकारकरभ चूर्ण 1 ग्राम x 2 मात्रा ।

''द वर्ग'' में अश्व 3 चूर्ण 5 ग्राम x 2 मात्रा ।

अश्व 3 चूर्ण = अ 2 ग्राम, ब 2 ग्राम, स 1 ग्राम सभी में अनुपान घृत 50 मि.लि. + दुग्ध 200 मि.लि. 30 दिन तक प्रयोग कराया गया ।

शुक्र परीक्षण में अ वर्ग में 50 प्रतिशत को लाभ, ब वर्ग में 40 प्रतिशत लाभ, स वर्ग में 10 प्रतिशत लाभ तथा द वर्ग में 60 प्रतिशत को लाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 8

शैफालिका का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. मुरलीधर मिश्रा
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1986 ; 166

गृध्रसी रोग में एकौषध शैफालिका (Nyctanthes arbortristis) का द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है।

रोगी चयन का आधार कटि प्रदेश से प्रारम्भ होकर पादागुंली तक होने वाला शूल, स्तब्धता व कंपन लक्षण रहे । 20 रोगी चयनित किये ।

शैफालिका पत्र क्वाथ 25 मि.लि. सुबह–शाम दो मात्राओं में 28 दिन तक दिया गया । सुखोष्ण दुग्धानुपान भी साथ में प्रयुक्त किया ।

10 रोगियों में 50 प्रतिशत लक्षणों में कमी हुई । 4 रोगियों में 30 प्रतिशत लक्षणों में अल्पता तथा 6 रोगियों में लाभ नगण्य रहा ।

शैफालिका पत्र क्वाथ कटु, तिक्त रस, लघु गुण, ऊष्ण वीर्य, कटुविपाकी, वातानुलोमन, अग्निदीपन तथा वेदना स्थापन कर्म वाला है ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 9

द्वीपान्तर वचा का गुणकर्मात्मक अध्ययन (आमवात के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता	:	डा. अशोक कुमार त्रिपाठी
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1986 ; 152

द्वीपान्तर वचा का आमवात में उपयोग हेतु उपलब्ध शास्त्राधार का पुनः गुणकर्मात्मक अध्ययन ही इस महानिबन्ध का उद्देश्य है।

आमवात के शास्त्रोक्त लक्षणों के आधार पर 24 रोगी चयनित कर द्वीपान्तर वचा (Smilax china - Liliaceae) के चूर्ण को 6–6 ग्राम सुबह शाम दो बार उष्ण जल से 21 दिन तक प्रयोग कराया गया।

औषधि सेवन के दूसरे सप्ताह में 17 प्रतिशत रोगियों में 70 प्रतिशत लाभ हुआ व 83 प्रतिशत रोगियों में 40 प्रतिशत लाभ हुआ ।

द्वीपान्तर वचा किंचित् तिक्त, लघु, रुक्ष, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाकी है ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 10

रसायन वर्ग की पुनर्स्थापना एवं कतिपय रसायन द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. कृष्णगोपाल
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1986 ; 211

व्याधि क्षमत्व में रसायन द्रव्यों की कार्यकारिता एवं भेषजिक प्रयोग का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

स्मृतिह्रास, अनिद्रा एवं चिड़चिड़ापन आदि 16 लक्षणों वाले 30 आतुरों को 3 वर्गों में विभक्त किया गया ।

''अ वर्ग'' में 10 आतुरों को गिलोय घनवटी 2–2 गोली x 2 बार ।

''ब वर्ग'' में 10 आतुरों को ब्राह्मी शर्बत 20 मि.लि. x 2 बार ।

''स वर्ग'' में 10 आतुरों को अश्वगंधा चूर्ण 5 ग्राम x 2 बार दिया गया ।

सभी वर्गों में प्रयोगावधि 30 दिन रही ।

गिलोय घनवटी से 81.18 प्रतिशत आतुरों में लक्षणोपशम,

ब्राह्मी शर्बत से 72.27 प्रतिशत आतुरों में लक्षणोपशम,

अश्वगंधा चूर्ण 91.08 प्रतिशत आतुरों में लक्षणोपशम हुआ ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 11

पुष्करमूल, लवंग, तालीसपत्र का श्वासहर कर्मात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. ऋषिकुमार शर्मा
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1986 ; 173

वात श्लेष्मिक श्वास रोग में वातकफघ्न पुष्करमूल, लवंग एवं तालीसपत्र का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्‌देश्य है।

आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर आतुरों को 5 वर्गों में विभक्त कर प्रायोगिक अध्ययन किया गया ।

1 वर्ग में 6 रोगी पुष्करमूल चूर्ण 1 ग्रा. x 3 जल से

2 वर्ग में 4 रोगी लवंग चूर्ण 1 ग्रा. x 2 बार जल से

3 वर्ग में 6 रोगी लवंग फाण्ट (3 ग्रा. चूर्ण का) x 2 बार

4 वर्ग में 6 रोगी तालीसपत्र चूर्ण 2 ग्रा. x 3 बार जल से

5 वर्ग में 6 रोगी (पुष्करमूल 2 ग्रा. + लवंग 1 ग्रा. + तालीश पत्र 3 ग्रा.) कुल 6 ग्राम x 3 बार जल से प्रयुक्त किया ।

सभी वर्गों में प्रयोगावधि 21 दिन रही ।

1 वर्ग में 3 रोगियों को 75 प्रतिशत लाभ, 2 को 50 प्रतिशत लाभ रहा ।

2 वर्ग में किसी को पूर्ण लाभ नहीं रहा ।

3 वर्ग में 1 को 75 प्रतिशत लाभ, 4 को 50 प्रतिशत लाभ रहा ।

4 वर्ग में 2 को 75 प्रतिशत लाभ, 4 को 50 प्रतिशत लाभ रहा ।

5 वर्ग में 4 को 75 प्रतिशत लाभ, 2 को 50 प्रतिशत लाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 12

शंखपुष्पी, पुनर्नवा एवं आमलकी का रक्तचाप पर अध्ययन

अध्येता	:	डा. अरुणकुमार तिवाड़ी
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1986 ; 185

उच्च रक्त दाब आयुर्वेदीय अनुसंधान योग्य विषय होना ही महानिबंध का विषय चयन हेतु है ।

रक्तदाब अंकन ही रोगी चयन का आधार है, 20 रोगियों के निम्न 4 वर्ग बनाये गये ।

अ वर्ग में 6 रोगी शंखपुष्पी (पंचांग) चूर्ण 3 ग्राम x 2 बार

ब वर्ग में 6 रोगी पुनर्नवा क्वाथ (एकौषध) 20 मि.लि. x 3 बार

स वर्ग में 6 रोगी आमलकी चूर्ण 3 ग्राम x 3 बार

द वर्ग में 8 रोगी अ–2 ग्राम + ब–20 मि.लि. + स–2 ग्राम संयुक्त कर दिन में 2 बार दिया गया ।

सभी वर्गों में प्रयोगावधि 21 दिन रही ।

अ वर्ग में 6 में से 4 रोगियों को 67 प्रतिशत लाभ हुआ ।

ब वर्ग में 6 में से 1 रोगी को 17 प्रतिशत लाभ हुआ ।

स वर्ग में 6 में से 2 रोगियों को 33 प्रतिशत लाभ हुआ ।

द वर्ग में 8 में से 3 रोगियों को 38 प्रतिशत लाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 13

मुस्तक का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. रामचन्द्र पाण्डे
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1987 ; 171

स्थौल्य रोग पर प्रभावी एकौषध का चयन ही इस अनुसंधान का उद्देश्य है।

चलस्फिगुदरस्तनु, अयथोपचय एवं उत्साह–हानि लक्षणों के आधार पर ऊंचाई व भार की आदर्श तालिका के अनुसार वृद्ध भार वाले 30 रोगी प्रयोगार्थ लिये गये ।

मुस्तक घन वटी 500 मि.ग्रा. की 2–2 गोली दिन में तीन बार 45 दिन तक प्रयुक्त करायी गयी । 15–15 दिन बाद ऊंचाई, भार, उत्साहहानि, अयथोपचय एवं स्फिग्, उदर के चलत्व की परीक्षा की गयी ।

भारह्रास 81.25 प्रतिशत रोगियों में हुआ, जो अधिकतम 40 प्रतिशत तक रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 14

कतिपय दन्त्य द्रव्यों की कार्मुकता पर अध्ययन

अध्येता	:	डा. योगेशचन्द्र जोशी
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1987 ; 235

दन्त्य द्रव्यों की कार्मुकता पर अब तक अनुसंधान कार्य अवशिष्ट हैं, अतः शीताद, दन्तवेष्ट एवं दन्तचाल रोगों में बब्बूल, अक्षोट, बकुल एवं तेजबल का प्रायोगिक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

उक्त रोगों के लाक्षणिक आधार पर 50 रोगी लेकर निम्न 8 कल्पनाओं का प्रयोग उक्त रोगों के रोगियों पर किया गया ।

1.	बकुल क्वाथ गण्डूष	2.	बकुल मन्जन
3.	बब्बूल क्वाथ गण्डूष	4.	बब्बूल मन्जन
5.	अक्षोट मन्जन	6.	तेजबल मन्जन
7.	मिश्रित मन्जन	8.	मिश्रित क्वाथ गण्डूष

सभी मन्जन दिन में 2 बार 2 ग्राम की मात्रा में तथा क्वाथ 25 मि.लि. कषाय कल्पना करके दिन में 2 बार 25 मिनट तक गण्डूष धारणार्थ दिये गये ।

तेजपत्र मन्जन एवं मिश्रित क्वाथ गण्डूष का लाभ 100 प्रतिशत रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 15

कतिपय श्वित्रघ्न द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. गिरिराज प्रसाद
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1988 ;

श्वित्र रोग की चुनौतीपूर्ण समस्या का उपयोगी आयुर्वेदीय औषधियों के अन्वेषण से समाधान ही महानिबन्ध का उद्‌देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक के अनुसार 32 रोगियों का चयन कर 3 वर्ग बनाये गये ।

प्रथम वर्ग में 10 रोगी PS-6 मलहर लेप गोमूत्र के साथ व 10–30 मिनट तक धूप सेवन।

द्वितीय वर्ग में 10 रोगी PS-6 चूर्ण का लेप (बाह्य) 10–30 मिनट तक धूप सेवन।

तृतीय वर्ग में 12 रोगी PS-6 गोली 2 गोली 3 बार आभ्यन्तर प्रयोग व PS-6 का लेप गोमूत्र के साथ कर 10–30 मिनट तक धूप सेवन कराया गया ।

सभी वर्गों में प्रयोग काल 3 माह रहा ।

प्रथम वर्ग में 40 प्रतिशत को पूर्ण लाभ, 40 प्रतिशत को मध्यम लाभ व 20 प्रतिशत रोगियों को अल्प लाभ रहा ।

द्वितीय वर्ग में 30 प्रतिशत को पूर्ण लाभ, 20 प्रतिशत को मध्यम लाभ व 40 प्रतिशत रोगियों को अलाभ रहा ।

तृतीय वर्ग में 60 प्रतिशत को लाभ, 30 प्रतिशत को सामान्य लाभ व 10 प्रतिशत को कोई लाभ नहीं रहा । अध्येता ने PS-6 के घटकों का वर्णन नहीं किया है।

द्रव्यगुण विज्ञान – 16

पौरुष ग्रन्थि वृद्धि पर कतिपय रसायन द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. उत्पलदास
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1988 ; 166

शिलाजीत, गुग्गुलु एवं गुडूची का मूत्रकृच्छ्र एवं मूत्राघात में द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

प्रत्यात्म लक्षणों के आधार पर मूत्रकृच्छ्र एवं मूत्राघात के 10 रोगियों का चयन किया गया ।

शिलाजीत, गुग्गुलु एवं गुडूची के सम्मिलित योग को SG-2 के नाम से प्रयोग किया, 600 मि.ग्रा. की 2–2 गोली सुबह शाम 2 बार दूध के साथ पथ्य (कृशरा, चपाती, दाल एवं पपीता) पूर्वक 30 दिन तक सेवन कराया ।

10 में से 3 रोगियों को 70–95 प्रतिशत तक प्रत्यात्म लक्षणों में लाभ रहा, 5 रोगियों को 40 प्रतिशत तथा 2 रोगियों को 40 प्रतिशत से भी कम लाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 17

पलाण्डु बीज के मधुमेहहर कर्म का अध्ययन

अध्येता	:	डा. मोहन लाल जायसवाल
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1988 ; 206

मधुमेह व्याधि विश्व की चिन्तनीय समस्या है, अतः आयुर्वेद में सुलभ, अल्पव्यय साध्य औषधि पलाण्डु बीज की कार्मुकता का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

प्रभूताविल मूत्रता, रक्तगत एवं मूत्रगत शर्करा की प्रयोगशालीय परीक्षाओं के आधार पर रोग निदान किया गया ।

कुल 20 रोगी चयनित कर 10 रोगियों को श्वेत पलाण्डु बीज एवं 10 रोगियों को रक्त पलाण्डु बीज का चूर्ण 5 ग्राम की 4 मात्राओं में 15 दिन तक प्रयोग कराया ।

20 में से 11 रोगियों पर 15 दिन में मूत्रगत एवं रक्तगत शर्करा की मात्रा में कमी हुई। किन्तु रक्त पलाण्डु बीज चूर्ण का रक्तगत शर्करा पर ह्रासात्मक प्रभाव विशेष परिलक्षित हुआ, प्रभूताविल मूत्रता पर इसका प्रभाव अपेक्षाकृत कम रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 18

कतिपय द्रव्यों की मधुमेह पर कार्मुकता

अध्येता	:	डा. बाहुबलि कुमार जैन
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1989 ; 194

राजरोग मधुमेह पर प्रभावी कतिपय आयुर्वेदीय द्रव्यों का गुणकर्मात्मक अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

प्रभूताविल मूत्रता, रक्तगत एवं मूत्रगत शर्करा तथा आतुर पत्रक के आधार पर स्थूलकाय 8 एवं कृशकाय 10 रोगियों का चयन किया गया ।

रोगियों को अश्विनी–3 (निम्बतेल, अश्वबला, शुद्ध गुग्गुलु क्रमशः 1:2:3 के अनुपात में) लेकर Oily granules बनाये गये, जिन्हें 600–600 मि.ग्रा. के 2 कैप्सूल दिन में 3 बार 3 सप्ताह तक दिया गया । अनुपान जल रहा ।

निम्ब से Azadirachta indica लिया गया, अश्वबला के रूप में Medicago sativa तथा गुग्गुलु के रूप में Commiphora mukul लिया गया ।

प्रयोगशालीय रक्तगत एवं मूत्रगत शर्करा में ह्रासात्मक प्रभाव देखने में आया, स्थूल व कृश दोनों वर्गों में समान प्रभाव परिलक्षित हुआ, चिकित्सा के 30 दिन तक की अवधि में शर्करा में ह्रास का क्रम निरन्तर रहा । स्थूल रोगियों पर औषधि का लक्षणों पर ह्रासात्मक प्रभाव अपेक्षाकृत ज्यादा रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 19

कतिपय मेदोघ्न द्रव्यों के मेदोहर प्रभाव का अध्ययन

अध्येता	:	डा. कन्हैया लाल
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1989 ; 188

स्थौल्य हर औषधियों का मेदोघ्न प्रभाव का अध्ययन ही महानिबन्ध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक द्वारा 25 आतुरों का चयन किया गया ।

चित्रकमूल चूर्ण, शुद्ध शिलाजतु और लोहभस्म को क्रमशः 4:3:1 अनुपात में लेकर 500 मि.ग्रा. की 2–2 गोली दिन में 3 बार 30 दिन तक प्रयुक्त की ।

प्रति 10 वें दिन रोगी का भार, वक्ष, उदर, नितम्ब, बाहु एवं चार चर्म स्तरों की मोटाई का परीक्षण किया ।

12 स्थौल्य आतुरों में से 6 पूर्ण स्थूल, 3 मध्यम स्थूल तथा 3 अल्प स्थूल थे। 13 आतुर सामान्य स्थौल्य लक्षणों से ग्रस्त थे, किन्तु स्थूलता की श्रेणी में नहीं समाविष्ट किये जा सकते थे ।

25 में से 13 आतुरों को लाभ रहा, जिसमें 2 को पूर्ण लाभ, 5 को अल्प भाराधिक्य मेदस्वी तथा 6 आतुरों में सामान्य प्रभाव हुआ । शेष 12 आतुरों पर कोई प्रभाव नहीं रहा।

द्रव्यगुण विज्ञान – 20

लोध्र का गुणकर्मात्मक अध्ययन (श्वेत प्रदर के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता	:	डा. त्रिशला जैन
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1989 ; 176

प्रमुख स्त्री रोग प्रदर पर सर्वसुलभ आयुर्वेदीय औषधि लोध्र का द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर 40 रुग्णाओं का चयन कर दो वर्ग बनाये गये।

प्रथम वर्ग में रुग्णाओं को लोध्रत्वक चूर्ण 3 ग्राम दिन में 2 बार 30 दिन तक दिया।

द्वितीय वर्ग में रुग्णाओं को लोध्र क्वाथ (यवकूट) को 20 मि.लि. क्वथित क्वाथ दो बार 30 दिन तक प्रयुक्त किया ।

त्वक् चूर्ण से 8 रुग्णाओं को 60–95 प्रतिशत लाभ, 10 को सामान्य लाभ (40 प्रतिशत तक) तथा 2 रुग्णाओं को 40 प्रतिशत से भी कम लाभ रहा ।

क्वाथ प्रयोग से 10 रुग्णाओं को 60–95 प्रतिशत तक लाभ, 8 को 40 प्रतिशत तक तथा शेष 2 रुग्णाओं को 40 प्रतिशत से भी कम लाभ रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 21

सुरञ्जान का गुणकर्मात्मक अध्ययन (आमवात के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता	:	डा. अमित के. दास
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1989 ; 196

आमवात रोग पर सुरञ्जान का द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन एवं प्रभावात्मक परिणाम ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक तथा रक्त परीक्षणों द्वारा 20 आतुर चयनित कर उनका R.A. Factor द्वारा आमवात निदान किया गया ।

सुरञ्जान (Colchicum luteum) के दो प्रयोग किए गये । सुरञ्जान मीठा 500 मि.ग्रा. की गोली के रूप में 3 ग्राम तक दिन भर में भोजनोपरान्त उष्ण दुग्ध से सभी रोगियों को दिया गया। साथ ही सुरञ्जान कटु 375 मि.ग्रा. की मात्रा भोजनोपरान्त दी गयी । प्रयोग अवधि 21 दिन रही।

3 आतुरों को 75–100 प्रतिशत लाभ रहा, 16 को 51–75 प्रतिशत लाभ रहा तथा 2 आतुरों को लाभ नगण्य रहा ।

द्रव्यगुण विज्ञान – 22

कतिपय द्रव्यों की कार्मुकता का श्वेत प्रदर के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

अध्येता	:	डा. बीना सोलंकी
निर्देशक	:	डा. रामपाल शास्त्री
वर्ष	:	1990 ; 183

अधिकांश स्त्रियों में श्वेत प्रदर व्याधि पर आयुर्वेदीय औषधियों का प्रभावात्मक एवं द्रव्यगुणकर्मात्मक अध्ययन ही महानिबंध का उद्देश्य है ।

आतुरवृत्त पत्रक के आधार पर 30 रुग्णाओं का चयन कर 15 (अशोक त्वक्, नागरमोथा, बिल्वमज्जा, धातकी पुष्प, रसोंत का सम्मिलित चूर्ण समान मात्रा में) नामक कल्पित योग की 525 मि.ग्रा. की 2–2 गोली तण्डुलोदक के साथ दिन में 2 बार 45 दिन तक प्रयोग करायी गयी ।

30 रुग्णाओं में से 17 को 75–100 प्रतिशत तक लाभ रहा व 13 को सामान्य लाभ 50–75 प्रतिशत तक रहा ।